www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 6, 4-5

Article ID: 195

ग्याभिन गाय व भैंस: कैसे करें उचित देखभाल

डॉ. हुकुम चन्द्र वर्मा,
डॉ. राकेश कुमार सिंह,
डॉ. राजपाल दिवाकर,
डॉ. मनोज कुमार वर्मा,
मुस्ताक अहमद एवं
अमित कुमार

पशु चिकित्सा एवं पशु पालन महाविद्यालय
आ.नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

गर्भवती गायों की उचित देखभाल करना अत्यनत आवश्यक है। सामान्यतः गर्भित होने के पश्चात गाय लगभग 280 दिन में बच्चा दे देती है अतः गर्भकाल की तिथि की जानकारी रखना अत्यनत आवश्यक होता है जिससे गाय के ब्याने में तिथि का सम्भावित अनुमान लग जाता है। बिना उचित रख्रखाव व देखभाल के पशुपालक काफी नुकसान उठाना पड़ सकता है। ब्याने की अनुमानित तिथि के लगभग 50 से 60 दिन पूर्व से ही पशु से दूध लेना बन्द कर देना चाहिए। इस समय अन्तराल में पशु अपने पिछले ब्यांत में दूध देने के समय में खोये हुये शारीरिक भार व तत्वों को पुनः प्राप्त कर सकेगा।

खान-पान:

गर्भित पशु के खान-पान पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए तथा अन्त के 50-60 दिनों के समय में गर्भ की वृद्धि काफी तेज होती है, इसके अलावा अयन की वृद्धि भी होती है, एवं पशु को अतिरिक्त पोषक तत्वों की जरूरत होती है। दाना पाचक तथा स्वादिश्ट होना चाहिए। गर्भित गाय को साधारणतया 25-40 कि.ग्रा. हरा चारा, 2.5-5 कि.ग्रा. भूसा चारा तथा 2.0 कि.ग्र. दाना एवं 50 ग्रा0 नमक प्रतिदिन दिया जाना चाहिए। इसके साथ-साथ पशु को 50 ग्राम खनिज तत्व की मात्रा प्रतिदिन देनी चाहिए।

गर्भित गाय को उसके आने वाले ब्यांत की तैयारी के लिए ब्याने के लगभग 6 सप्ताह पूर्व से विशेष प्रकार से खिलाई-पिलाई की जाती है। इसे स्टीमिंग अप या फिटिंग कहा जाता है। इसका उद्देष्य यह होता है कि गाय ब्याने के उपरान्त आहार खाने की आदी रहे ताकि उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो, स्वस्थ एवं सामान्य बच्चा उत्पन्न हो।

खनिज और विटामिन की कमियों के बारे में विषेश ध्यान रखा जाना चाहिए। क्योंकि नवजात बछडे पर उनका गंभीर प्रतिकूल प्रभाव हो सकता है। खनिज युक्त नमक को खिलाना कैल्शियम और फास्फोरस की सिफारिश की मात्रा में इन समस्याओं से बचने के लिए आम तौर पर पर्याप्त होता है। ध्यान रखना चाहिए कि कैल्शियम और फास्फोरस अत्यधिक मात्रा में नही लिया जाना चाहिए।

गर्भावस्था के पिछले कुछ हफ्तों के दौरान योनि का बढावा देने की प्रवृत्ति होती है जो कब्ज, खनिज की कमी और दुर्बलता के कारण हो सकती है। प्रजनन पथ के सामान्य स्वर को बनाए रखने के लिए संतुलित और रेचक राशन खिलाया जाना चाहिए।

कुछ समय के बाद एडियां कैल्विंग से पहले होता है यह आध घण्टे के लिए मध्यम व्यायाम से बचा जा सकता है, दो से तीन बार प्रति दिन। कुछ मिनट के लिए आलू की मात्रा भी उपयोगी है। मूत्र वर्धक और प्रीपेरमम दुहना का प्रयोग गंभीर मामलों में सहायक हो सकता है।

आवास व्यवस्था:

गर्भवती पशु को ब्याने के लगभग 15-20 दिन पूर्व अन्य पशुओं से अलग कर देना चाहिए। पशुपालकों को गर्भित पशु हेतु उचित स्थान का चयन पूर्व में ही कर लेना चाहिए। आवास सुरक्षित शान्त हवादार एवं रोशनी युक्त होना चाहिए, आस-पास पानी की समुचित व्यवस्था भी होनी चाहिए। कमरे के फर्श पर पानी न रूके इसका ध्यान रखें। कमरे को पहले साफ कर लें तथा चूना आदि

छिडक लें। जंगली जानवर एवं कुत्ते अन्दर न जा सकें इसका प्रबंध कर लें। एक गर्भवती गाय हेतु लगभग 100-10 वर्ग फीट छत सहित तथा 180-200 वर्ग फीट खुला स्थान पर्याप्त होता है।

प्रसव के समीप व्यवस्था:

सामान्यतः पशु के ब्याने में लगभग एक या दो घंटे का समय लगता है। ब्याने के समय पशु के देखभाल एवं सहायता के लिए सहायक को उपस्थित रहना चाहिए। ब्याते समय सबसे पहले बछडे के अगले पैर आते हैं फिर मुँह, कभी-कभी बच्चे के पिछले पैर बाहर आते हैं। अगर बच्चा निकालने में परेशानी होती है तो पास के पशुचिकित्सक को बुलाना चाहिए। अगर पशु दो या अधिक घंटे तक नही ग्याता तो इसे कठिन प्रसव समझना चाहिए व निकट के पशु चिकित्सक को बुलाना चाहिए।

प्रसव के समय सावधानी:

ब्याने का समय आने पर पशु निम्नलिखित लक्षण प्रदर्शित करता है, अयन का फूल जाना, भग का फूल जाना, पुंछ क पास का क्षेत्र ढीला पड़ जाना, भग की जगह से स्राव निकलना इत्यादि। ब्याने के कुछ दिन पूर्व ही कुछ पशुओं के अयन में दूध उतर आता है लेकिन इसे ब्याने के पूर्व नही निकालना चाहिए। ब्याने के पूर्व दूध दोहन से बछडों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडगा क्योंकि उन्हें खीस नही मिल पाता है जो कि अत्यनत पोषक होता है। पशु के ब्याने के पश्चात पशु के बाहय जननांग, कोख व पूछ अच्छी तरह से गरम पानी जिसमें लाल दवा या नीम की पत्ती उबली हो, से धो लेना चाहिए यह कीटाणुहरण का काम करती है। पशु को ठंडी से बचाने के लिए गरम पानी या गुड़ का गरम शर्बत देना चाहिए।

जेर का गिरना:

ब्याने के उपरान्त साधारणतया जेर लगभग 2-4 घंटे में गिर जाती है यदि यह 8-12 घंटे के बाद भी नहीं गिरती है तो पशु चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए। जब जेर गिर जाय तो उसे जमीन में गाड़ देना चाहिए अथवा जला देना चाहिए। इस बात का ध्यान देना चाहिए कि पशु जेर को चाटे या खाये नहीं। इससे पशु के दुग्ध उत्पादन में विपरीत प्रभाव पड़ता है क्योंकि जेर का पाचन आसानी से नही होता तथा जेर अंदर जाकर पाचन क्रिया पर विपरीत प्रभाव डालती है।

पशु का आहार आसानी से पचने वाला तथा पौश्टिक होना चाहिए। हाल ही में ब्याहे हुये पशु को गेहं का दलिया, गुड सोंठ और अजवाइन आदि को मिलाकर तथा साधारण प्रकार से पका कर खिलाना चाहिए।

ब्याने के उपरान्त बछडे की नाल को काटकर उसमें आयोडीन लगा दें ताकि बीमारियों का संक्रमण न हो सके। बछड़े के मुँह एवं नाक से बलगम निकाल कर साफ कर देना चाहिए ताकि वह आसानी से सांस ले सके। बछडे को आधे घन्टे के अन्दर खीस या पशु का पहला दूध अवश्य पिला देना चाहिए क्योंकि यह बच्चे का बीमारियों से बचाता है एवम् जीने की शक्ति प्रदान करता है।

पशुशाला की सफाई करके फिनाइल के घोल का छिउकाव कर देना चाहिए। इस प्रकार उचित रखरखाव एवं देखभाल से पशुपालक गर्भवती गाय तथा भैंस से एवं स्वस्थ बछडा पा सकते हैं तथा दुग्धोत्पादन को बढ़ा सकते हैं।